Date : 30 मार्च 2023

वारसा समझौता

संदर्भ- हाल ही में नॉर्डिक देशों के वायु सेना प्रमुख रूस के खिलाफ एकत्रित हुए हैं। इनके पास लगभग 300 लड़ाकू विमान हैं जिनका लक्ष्य अंततः एक बल के रूप में कार्य करना है। इस कदम को रूस यूक्रेन संघर्ष के कारण यूरोप में आई असुरक्षा की भावना के प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है।

नई वारसा संधि –

- नॉर्डिक देश, आर्कटिक में पश्चिमी यूरोप के सबसे उत्तरी हिस्से को दर्शाते हैं। जिसमें डेनमार्क, फिनलैण्ड, नॉर्वे , स्वीडन, आइसलैण्ड, फरो द्वीप समूह, ऑलैण्ड द्वीप समूह आदि देश आते हैं। इन देशों में **डेनमार्क, फिनलैण्ड, नॉर्वे व स्वीडन** ने एक वायु क्षेत्र की रक्षा के लिए एक समझौता किया है जिसे नई वारसा संधि कहा जा रहा है।
- यूरोप में लम्बे समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण नार्डिक समेत समस्त यूरोप असुरक्षित महसूस कर रहा है।(युद्ध का कारण यूक्रेन की नाटो के सदस्यता में रुचि को माना जा रहा है।)क्योंकि वर्तमान में रूस व नाटो(North Atlantic treaty Organisation) देश जो परमाणु शक्ति में अग्रणी हैं, के बीच परस्पर टकराव की संभावना बढ़ रही है।
- मध्य यूरोप की निष्क्रियता और पश्चिमी देशों (अमेरिका व इंग्लैण्ड) की सहायता, पूर्वी यूरोप को एक साथ आने के लिए परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही हैं।
- पश्चिमी देशों द्वारा यूक्रेन को सहायता पहुँचाई जा रही है जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी व ब्रिटेन शीर्ष पर है। अब नार्डिक समूह भी रूस के खिलाफ एक साथ आ रहा है।
- डेनमार्क, फिनलैण्ड, नॉर्वे और स्वीडन की सामूहिक प्रतिक्रिया को न्यू वारसा संधि के रूप में देखा जा रहा है।

वारसा संधि-

- 1955 में उत्तरी अटलांटिक राज्यों के प्रतिद्वंदी के रूप में साम्यवादी गुट राज्यों द्वारा वारसा समझौता किया गया।
- **साम्यवादी सदस्य राज्य-** अल्बानिया, बल्गारिया, चेकोस्लाविया, पूर्वी जर्मनी, हंगरी, पोलैण्ड, रोमानिया, सोवियत संघ थे।
- **उद्देश्य-** पूर्वी यूरोपीय राज्यों के मध्य **शांति व परस्पर सहयोग** के लिए एक संगठन की स्थापना करना था।
- इस संधि के आठों राज्यों के सैनिक बलों के लिए एक एकीकृत सैनिक कमान की स्थापना की गई। जिसके तहत यह प्रावधान रखा गया कि पूर्वी यूरोप के किसी भी देश में आक्रमण होने की स्थिति में अन्य सभी देश उसकी हर संभव सहायता करेंगे, जिसमें सैनिक सहायता भी शामिल है। नॉर्डिक देशों द्वारा इसी प्रकार के समझौते को नई वारसा संधि कहा जा रहा है।
- इस संधि के तहत कई बार साम्यवादी गुट एक साथ आए। किंतु साम्यवादी विघटन के साथ यह संधि का अस्तित्व भी समाप्त हो गया।
- पूर्व वारसा संधि में शामिल रोमानिया, पोलैंड, हंगरी और बुल्गारिया, बुखारेस्ट नाइन के सदस्य हैं।

बुखारेस्ट नाइन-

- बुखारेस्ट नौ या बुखारेस्ट प्रारूप, जिसे अक्सर बी 9 के रूप में संक्षिप्त किया जाता है, 4 नवंबर, 2015 को स्थापित किया गया था और इसका नाम रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट से लिया गया है।
- B9 में रोमानिया, पोलैंड, हंगरी, बुल्गारिया, चेक गणराज्य, स्लोवाकिया, एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया देश शामिल हैं।
- सभी नौ देश कभी विघटित सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे, लेकिन बाद में उन्होंने लोकतंत्र का मार्ग चुना।
- यह देश शीत युद्ध के बाद NATO में शामिल हो गए थे।
- B9 के सभी सदस्य यूरोपीय संघ (EU) और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO) का हिस्सा हैं।
- वर्तमान नाटो में 30 देश साि◌ल हैं जो नाटो के साथ व उसके बाहर भी अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं।

भारत की प्रतिक्रिया-

भारत और रूस एक लम्बे समय से रणनीतिक रूप से सहयोगी राष्ट्र रहे हैं इसके साथ ही भारत, अमेरीका से भी मैत्री रखता है जो NATO का प्रतिनिधित्वकर्ता है। ऐसे में भारत को रूस व यूक्रेन युद्ध में मध्यस्थ के रूप में देखा जा रहा था। भारत ने रूस के साथ अपनी मैत्री बनाए रखने पर जोर दिया है। जिससे भारत को किफायती दामों में तेल की आपूर्ति हो सके। भारत किसी भी पक्ष का विरोध न करते हुए केवल देश के हितों को प्राथमिकता दे रहा है।

भारत वर्तमान में डी हाइफनेशन नीति पर अमल कर सकता है। भारत ने एक लम्बे समय तक इजराइल फिलीस्तीन संघर्ष में इसी नीति का पालन किया था। जिसमें भारत, फिलीस्तीन समर्थक होने के साथ ही इजराइल के साथ मैत्रीपूर्ण रहा है।

स्रोत
Indian Express
indianexpress.com

Gunjan Joshi

असम की धरोहर गमोसा

संदर्भ- रविवार को एक समारोह में बांग्ला साहित्य सभा, असम (BSSA) ने अतिथियों का सम्मान असमिया गमोसों और बंगाली गमछाओं से बने "हाइब्रिड गमोसों" से किया, जिन्हें आधा काटकर एक साथ सिल दिया गया था। इसे लेकर राज्य में छिड़े विवाद के बाद संगठन ने मंगलवार को माफीनामा जारी किया। असमिया गमोसा को सफेद कपड़ा व बंगाली गमोसा को लाल व सफेद चेक वाला गमोसा को निर्देशित करता है।

गमोसा- गमोसा या गमछा का शाब्दिक अर्थ है- शरीर को पोंछने के लिए कपड़ा। जिसका सम्पूर्ण भारत में प्रयोग होता है। भगवदगीता व महाभारत जैसे ग्रंथों को भी पवित्र गमोसा या गमछे के कपड़े से कवर किया जाता है।

- असम के अतिरिक्त मणिपुर में गमोसा लेंगयान या गमछा खुदेई के रूप में जाना जाता है।
- त्रिपुरा में इसे रिकुटु के नाम से पुरुषों की पारंपरिक वेशभूषा के रूप में पहना जाता है।
- उत्तर प्रदेश व बिहार में इसे गमछा या अंगौछी कहा जाता है। यहाँ मुख्य रूप से इसे सूत के कपड़े का चार रंगों में बनाया जाता है- लाल, गुलाबी, उजला सफेद और सफेद।
- उड़ीसा में गमछे का प्रयोग अभिवादन करने के लिए किया जाता है।
- दक्षिण भारत में इसे कपास व रेशम के कपड़े से निर्मित किया जाता है और इसे अंगवस्त्रम कहा जाता है। तमिलनाडु में इसे थुंडु व केरल में इसे थोरथ मुंडु कहा जाता है।
- पंजाब में इसको साधारण प्रयोग के साथ पगड़ी के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

असम में इसका व्यापक उपयोग किया जाता है-

- घर पर एक तौलिया, जिसे उका गामोसा कहा जाता है
- किसानों के द्वारा कमर व सिर पर बंधनी के रूप में धारण करते हैं जिसे टोंगली या सुरिया कहा जाता है।

- बिहू नर्तक इसे सिर पर **संकल्प** की गांठ के रूप में धारण करते हैं। जिसे बिहुवान कहा जाता है।
- भगवदगीता को कवर करने के लिए भी गमोसा का प्रयोग किया जाता है।
- सार्वजनिक कार्यों (जिसे फूलम/पुष्प गमोसा कहा जाता है) में **गणमान्य** व्यक्तियों या मशहूर हस्तियों को सम्मानित करने के लिए किया जा सकता है।

असम गमोसा की विशेषता –

- गमोसा, असम की सांस्कृतिक विरासत है जिसे 13 दिसंबर 2022 को **जीआई टैग** प्राप्त हुआ है।
- असम व उड़ीसा में लाल किनारी के साथ सफेद सूत का गमोसा प्रचलित है। इसकी किनारी पर कशीदाकारी या सुंदर प्रिंट होता है।
- असम में गमोसा को राष्ट्रवाद का प्रतीक माना जाता है।

गमोसा : एक राष्ट्रवाद प्रतीक

असम के निम्नलिखित संगठनों द्वारा असम की संस्कृति व साहित्य को **प्रोत्साहित** किया गया और इस प्रोत्साहन में असोम के गमोसा को एक अलग पहचान प्राप्त हुई।

- **असम छात्र सम्मेलन-** यह असम का पहला छात्र संगठन था। इसका पहली सभा गुवाहाटी मे आयोजित की गई। यह एक गैर राजनीतिक सम्मेलन था जिसकी अध्यक्षता लक्ष्मीनाथ बैजबरुआ ने की थी। इसका गठन 25 दिसंबर 1916 असम के साहित्य व संस्कृति के विषय में जन **जागरुकता** लाने के लिए गठित किया गया था।
- **असोम साहित्य सभा-** असोम साहित्य सभा का गठन 1916 में किया गया था। असम तथा अन्य राज्यों में इसकी 1000 से भी अधिक शाखाएँ कार्य रही हैं।
- **1980 का असम आंदोलन** असम में जातीयता का प्रतीक माना जाता है, इस आंदोलन को क्षेत्रीय पहचान दिलाने के लिए असम की संस्कृति, साहित्य, कला को पहचान दिलाने के प्रयोस किया गया। इस आंदोलन को देश भर में पहचान दिलाने **में** गमोसा ने अहम भूमिका निभाई।
- **गमोसा राजनीतिक विवाद 2021** में AIUDF के प्रमुख बदरुद्दीन द्वारा गमोसा फेंकने के कारण एक राजनीतिक व **साम्प्रदायिक** विवाद खड़ा हो गया था। वर्तमान में गमोसा, केवल आवश्यकता की वस्तु न होकर क्षेत्रीय पहचान व सम्मान का प्रतीक बन गई है।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

असम की अन्य धरोहर

जापी-

- जापी बांस से बनी एक शंक्वाकार टोपी है और सूखे टोकू (ऊपरी असम के वर्षावनों में पाया जाने वाला एक ताड़ का पेड़) के पत्तों से ढकी होती है।
- जापी मेंहमानों को सम्मानित करने के लिए भेंट के रूप में प्रयोग की जाती है।
- पारंपरिक रूप से किसान इसका प्रयोग खेत में कार्य करते हुए धूप, बारिश व सर्दी से बचने के लिए किया करते थे, किंतु अब इसने क्षेत्रीय पहचान के रूप में अपनी जगह बनाई है।
- अहोम साम्राज्य की प्राचीन बुरुंजी से इसके प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं।
- वर्तमान में असम के नलबाड़ी जिले के लोगों द्वारा इसका निर्माण किया जाता है।

जोराई –

- जोराई बेल मेटल से निर्मित एक ट्रे स्टैण्ड होता है।
- प्रत्येक असम निवासियों के घर में यह पाया जाता है जिसे मेंहमानों को पान सुपारी परोसने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
- असमिया भाषा के प्रसिद्ध नाटककार व लेखर शंकरदेव के समय में भी यह वस्तु असम की संस्कृति में प्रयुक्त की जाती थी।

स्रोत

INDIAN EXPRESS
indianexpress.com

Gunjan Joshi

yojnaias.com